10 सौंदर्यपरक पर्यावरण का सृजन

यह महत्वपूर्ण है कि जो छात्र यह पाठ्यक्रम पढ़ते हैं उन्हें उसे उपयोग करने के अवसर भी मिलें, जिससे वे अपने दैनिक जीवन में निखार ला सकें। छात्रों से व्यावहारिक रूप से इसे प्रदर्शित करने के लिए कहा जाए कि वे अपने विद्यालय, घर और समुदाय में एक सौंदर्यपरक परिवेश कैसे बना सकते हैं। वे अपने अध्ययन में पढ़ी गई शिल्पकारी की वस्तुओं से कक्षा को नया रूप दे सकते हैं, वे विद्यालय के सूचना पट्ट को डिज़ाइन कर सकते हैं या प्रधानाचार्य के कार्यालय की सजावट कर सकते हैं। छात्र समय-समय पर अपने कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए एक प्रदर्शनी का आयोजन कर सकते हैं और उस पर प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकते हैं। छात्र यह भी सीख सकते हैं कि इन उत्पादों को उनके जीवन तथा समुदाय में किस प्रकार रचनात्मक रूप से उपयोग किया जा सकता है।

इस गतिविधि का प्रयोजन आपके और अन्य लोगों के जीवन में रंग भरना है। पता लगाएँ कि आप और आपकी कक्षा किस प्रकार से कला एवं शिल्प को अपने घर और विद्यालय में लाकर परिवेश को बेहतर बना सकते हैं।

गुजरात में संतोक बेन की यह कहानी पढ़ें और कुछ नए विचार पाएँ जिनसे आप अपने जीवन में रंग भर सकते हैं।

आप अपने घर, विद्यालय और आसपास का परिवेश कैसे सुंदर बना सकते हैं?

- सफाई रखकर,
-
-
-
-

पारंपरिक कला से फ़र्श की सजावट

© NCERT not to be republished

दुनिया में रंग भरना

संतोक बेन उत्तरी गुजरात के एक गाँव में रहती हैं। उनके पति किसान हैं। खेत में आवश्यकता पड़ने पर वह उनके साथ काम करती हैं, और शेष समय घर के कामों में व्यस्त रहती हैं।

केवल खाना पकाना और सफाई ही उनके काम नहीं हैं, वे कपड़े, रजाइयों और वॉल हैंगिंग पर कढ़ाई करती हैं। वे आसपास की लड़कियों को अपनी शिल्पकारी सिखाती हैं और उन्हें कहानियाँ सुनाकर मनोरंजन करती हैं। वे त्योहारों के मौसम में अपने घर की दीवारों पर रंग करती हैं। वे मिट्टी की झोंपड़ी को एक सपनों के घर में बदल देती हैं। इसके लिए वे रंगों के छोटे-छोटे बिंदु और सफ़ेद लेस का इस्तेमाल करती हैं। यदि आप इस कार्य के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं तो वे संकोच भरी मुस्कुराहट के साथ गर्व और सहजता के मिले-जुले एहसास के साथ कहती हैं ''ए घरना गोकुल छे'' (यह मिट्टी का बना हुआ गोकुल है)। गोकुल शब्द के दो अर्थ हैं ''गायों के रहने की झोंपड़ी'' और ''ईश्वर का निवास''।

क्या आप मानते हैं कि सभी को रचनात्मक होने का अधिकार है?

संतोक बेन ने कहीं से इस कला को नहीं सीखा किंतु वे आपको दिखाने के लिए सभी प्रकार के अभिविन्यासों में ज्यामिती या ज्यामिती जैसी इकाइयों का इस्तेमाल करती हैं। उनकी कला की बहुत माँग है। जब भी उनके पास समय होता है, वे अपने पड़ोसियों के घर जाकर उनके घर रँगने में सहायता करती हैं, या वे धुलने योग्य स्याही में माचिस की तीली को डुबा कर कढ़ाई की रूपरेखा तैयार करती हैं। उन्होंने इतने सारे डिज़ाइन तैयार किए हैं कि अब खजाना बड़ा हो गया है, यदि आप उनके सामने कागज़ का एक टुकड़ा रखें तो वे उस पर भी कोई आकृति बना देती हैं, सामान्य रूप से यह कोई एक सामान्य-सी रचना या कोई संकल्पना होती है।

संतोक बेन और उनके सहयोगी गाँवों में रंग भरते हैं। न केवल चेहरे मोहरे, कपड़ों या हस्तकला से बल्कि उनकी बातचीत, हँसी और उनके व्यक्तित्व के खुलेपन से उनकी बुद्धिमानी भी स्पष्ट झलकती है। वह अपनी बेटी के बारे में बताती हैं और काम जारी रखती हैं। उनकी बेटी शारदा ने पढ़ाई की, एक मिलकर्मी के साथ उसका विवाह हुआ और अब वह कस्बे में रहने लगी है। संतोक बेन उसके भाग्य को लेकर उदास हो जाती है क्योंकि उसके जीवन

गुजरात की कढ़ाई

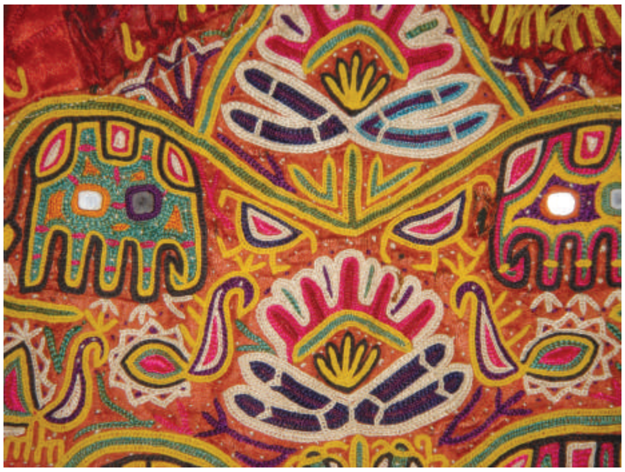

में कोई रस या रंग नहीं बचा है, मानो सफ़ेदी पोत दी गई है। उसका पति एक भद्र पुरुष है पर एकदम बीमार दिखता है और वह कितना कम हँसती है!

—के. जी. सुब्रमण्यम्, द मैजिक ऑफ़ मेकिंग–कला और संस्कृति पर लेख

क्रियाकलाप 10.1

भित्ति पत्रिका

कक्षा—12

समय—कार्य आवंटन

प्रत्येक शिल्प के इतिहास और विकास पर ढेर सारी सामग्री जमा की जा सकती है। इसमें समाचार पत्रों की कतरनें, पत्रिकाओं के लेख, तसवीरें और यहाँ तक कि शिल्पकारी की वस्तुएँ शामिल होंगी। जबकि इस सामग्री का बहुत सारा भाग दोहराया हुआ या अनावश्यक होगा।

इस सामग्री की समीक्षा के लिए छात्रों के दो या तीन छोटे समूह बनाएँ और निम्नांकित चरण अपनाएँ।

- प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुतीकरण के लिए एक विषयवस्तु चुनी जाए।
- अनावश्यक सामग्री को हटा दिया जाए।
- संबंधित सामग्री में से सर्वोत्तम को चुना जाए।
- प्रस्तुतीकरण के लिए अनेक तरीकों को अपनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, तसवीरें, तालिकाएँ, मानचित्र, चार्ट, विवरणात्मक अनुच्छेद, आरेख, वास्तविक कच्ची सामग्री आदि।
- शुरूआती खाका बनाने के लिए समाचार पत्र या भूरे कागज पर इन सभी को एक रूप में व्यवस्थित किया जाए और आकर्षक व्यवस्था बनाई जाए।
- इनके बीच के अंतर और शीर्षक तय किए जाएँ।
- इस बात का ध्यान रखा जाए कि सामग्री में एक क्रमबद्ध प्रवाह दिखाई दे।

छात्रों द्वारा यह सामूहिक कार्य पूरा होने पर शिक्षक आगे बढ़कर समूहों के प्रमुख छात्रों से इन खाकों की प्रभावशीलता के बारे में चर्चा करें। अंतिम चयन और परिवर्तन इसी चरण पर किया जाए। सर्वोत्तम प्रदर्शन तकनीक, समग्र डिज़ाइन, प्रयोग किए जाने वाले रंगों और अक्षरों पर निर्णय लिए जाएँ, ताकि इन्हें एक सीमा तक मानकीकृत किया जा सके। प्रत्येक समूह को विषयवस्तु पैनल आवंटित किए

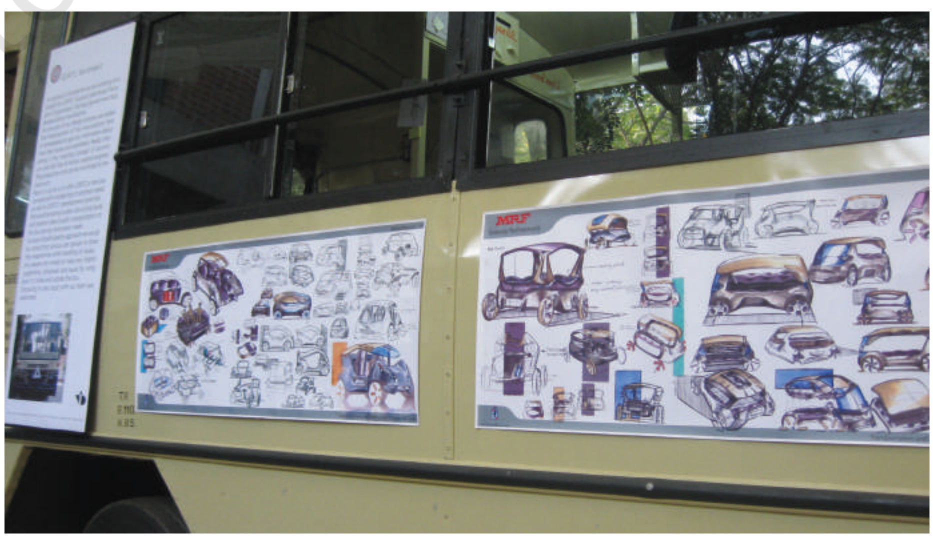

© NCERT not to be republished

जाएँ और इन सभी को एक मिश्रित भित्ति पत्रिका बनाने के लिए मिलाकर रखा जाए।

इस विधि से छात्रों को व्यक्तिगत और समूहों में कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। अपने पास रखने के लिए इस पत्रिका के प्रस्तुतीकरण की फोटो लेना न भूलें। इस भित्ति पत्रिका को दो या तीन सप्ताह तक यथावत् रखें और फिर बाद में उपयोग के लिए सहेज लें। उदाहरण के लिए, वर्ष के अंत में एक प्रदर्शनी लगाने या आने वाले वर्षों में जब किसी नए समूह द्वारा यही विषयवस्तु खोजी जाएगी तब आप इसे दिखा सकते हैं।

भित्ति पत्रिका के लिए विषय

जब आप अपनी पाठ्यपुस्तक से एक अध्याय पढ़ चुके हों तो एक चित्रमय भित्ति पत्रिका बनाएँ। नीचे दो विषय सुझाए गए हैं–

- भारत में विभिन्न आयु वर्ग के लिए और शरीर के विभिन्न भागों के लिए आभूषण डिज़ाइन किए और बनाए जाते हैं।
- भारत का वस्त्रोद्योग मानचित्र बनाएँ। उसमें फोटो और कपड़ों के नमूनों को लगाकर भारत की वेशभूषा का चित्रण करें। साड़ियों को पहनने के अलग-अलग तरीके, इस देश के प्रत्येक क्षेत्र की बुनावट या कढ़ाई की शैलियाँ प्रदर्शित करें।

क्रियाकलाप 10.2

कक्षा की पुनर्सज्जा

कक्षा–11

समय–कक्षाकार्य आवंटन

सुझाए गए विचार

- अपनी कक्षा को अपने क्षेत्र के कपड़ों के नमूनों/भित्ति चित्रों/पारंपरिक शिल्पकारी से सजाएँ।
- अपने राज्य की प्रत्येक शिल्पकारी की महत्वपूर्ण विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए शिल्प मेले के लिए पोस्टर बनाएँ।
- भित्ति पत्रिका/समाचार पत्र/कार्टून बनाएँ।

प्रधानाध्यापक का कमरा सजाने के लिए विभिन्न पारंपरिक भित्ति चित्रों का प्रयोग किया जा सकता है

क्रियाकलाप 10.3

प्रधानाचार्य-कक्ष

कक्षा–12

समय–कक्षाकार्य आवंटन

प्रधानाचार्य के कार्यालय में शिक्षक, छात्र, अभिभावक और अतिथि आते रहते हैं। यह शिल्प योजना के लिए एक आदर्श स्थान है, जहाँ छात्रों की शिल्पकारी और अभिकल्पना (डिज़ाइन) कौशल प्रदर्शित किए जा सकते हैं।

© NCERT not to be republished

सुझाए गए विचार

- भित्ति चित्र
- भित्ति पत्रिका
- शिल्पकारी प्रदर्शन
- विरासत मानचित्र

सुनियोजित सज्जा की क्या विशेषताएँ होती हैं?

क्रियाकलाप 10.4

विद्यालय-संग्रहालय

कक्षा–11

समय–क्षेत्र-भ्रमण एवं कक्षाकार्य आवंटन

क्षेत्र-भ्रमण के दौरान विभिन्न प्रांतों से अलग-अलग शिल्प समुदायों द्वारा बनाई गई, तरह-तरह की कलात्मक वस्तुओं के संग्रह से विद्यालय के किसी कक्ष/कोने में विद्यालय का अपना संग्रहालय बनाया जा सकता है।

सुझाए गए विचार

- घर से बर्तनों, साड़ियों, रसोई के उपकरणों आदि को लाकर प्रदर्शित करें।
- स्थानीय हाट या मेले में जाएँ। मिट्टी/धातु/कागज़ की वस्तुओं का संग्रह करें। कमरे में एक प्रदर्शन कोना बनाएँ और प्रत्येक शिल्प वस्तु के रूप और उसके उपयोग को समझाने के लिए लिखकर लेबल लगाएँ।

विद्यालय में संग्रहालय के लिए विभिन्न शिल्प सामग्रियों का संग्रह

© NCERT not to be republished

क्रियाकलाप 10.5

प्रदर्शनियाँ

कक्षा–11 और 12

समय–कक्षाकार्य आवंटन

पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति शताब्दियों से आत्मनिर्भर रही है जिसमें बर्तन बनाना, टोकरी बनाना, बुनाई, कालीन निर्माण, लुहारी आदि जैसे कुटीर उद्योग शामिल हैं, जिन्हें पारिवारिक स्तर पर घरों के अंदर किया जाता था। यहाँ शिल्पकार कभी खाली नहीं बैठते थे।

असंख्य जनजातीय समुदायों में से नागा जनजाति के लोग अनूठी पहचान प्रदान करने वाली बुनावट के वस्त्र पहनते हैं। उनके अंग-वस्त्र/शाल तीन अलग-अलग बुने गए हिस्सों को जोड़कर बनते हैं, जिनमें आमतौर पर बीच का हिस्सा अन्य दो भागों की तुलना में अधिक बारीकी से बुना जाता है।

नागा पोशाक की प्रत्येक परंपरागत वेशभूषा नागा जीवन-दर्शन, विश्व-विचारधारा और पारंपरिक मूल्यों की एक अभिव्यक्ति है। अलग-अलग नागा जनों के कपड़ों के अपने अलग डिज़ाइन होते हैं। इनके समूह में कौन व्यक्ति कैसा शॉल पहनेगा यह उसकी व्यक्तिगत रुचि का विषय नहीं है। इनके कपड़े इनकी सामाजिक स्थिति (सेनानी, संपत्ति, सामान्य या विशिष्ट व्यक्ति, प्रमुख या भोज देने वाला) और सांस्कृतिक पक्ष को दर्शाते हैं। नागा शालों में सरल सफ़ेद कपड़े से लेकर धनवान/योद्धा के विशिष्ट डिज़ाइनों की विविधता पाई जाती है।

सुझाए गए क्रियाकलाप

- फोटोग्राफ, अखबारों तथा पत्रिकाओं की कतरनों, इंटरनेट आदि का उपयोग करते हुए पूर्वोत्तर भारत की पोशाकों का एक प्रदर्शन तैयार करें।
- विचार करें कि वेशभूषा और आभूषण किस प्रकार आपके समुदाय के अलग-अलग सदस्यों की सामाजिक स्थिति को दर्शाते हैं। इसमें 'आज के युवाओं में कपड़ों की भाषा' विषय को भी शामिल करें। तर्क करें कि क्या लोकतंत्र में ऐसा होना चाहिए।
- क्या विद्यालयों में वर्दी का होना एक अच्छा विचार है? इसके पक्ष और विपक्ष में विचार दर्शाने के लिए एक प्रदर्शन तैयार करें।

not to be republished

क्रियाकलाप 10.6

प्रदर्शन

कक्षा–11 और 12

समय–कक्षाकार्य आवंटन

स्वास्थ्य, सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण, वन्य जीव-संरक्षण आदि विषयों पर महत्वपूर्ण संदेश देने के लिए पारंपरिक कथा वाचन शैली के तत्वों को सम्मिलित करते हुए पटचित्रों (scroll) का निर्माण करें। राजस्थान के भोपा-भोपी की तरह संगीत व नृत्य के माध्यम से पटचित्रों पर आधारित प्रदर्शन करें। इसके लिए आप अपने स्वयं के संगीत वाद्यों व गीतों की रचना करें।

भोपा (कथावाचक), राजस्थान

पटचित्र का प्रदर्शन करते छात्र

not to be republished

क्रियाकलाप 10.7

अभिकल्पना (डिज़ाइन) प्रयोग

कक्षा–11 और 12

समय–तीन कालांश और गृहकार्य

पोस्टर/चार्ट/विवरणिका/भित्ति पत्रिका बनाते समय डिज़ाइन के अनेक पक्षों पर विचार करें।

आइए इन तीनों पक्षों के साथ प्रयोग करें–

- रेखा
- रंग
- आकार/रूप

रेखा

रेखाओं से अभिव्यक्ति की जा सकती है।

अलग-अलग पेंसिलों–एचबी, 2बी, 4बी, 8बी, पैन, ब्रश आदि से अभिव्यक्ति रेखाएँ बनाएँ।

विभिन्न अभिकल्पनाओं में प्रयोगरत छात्र

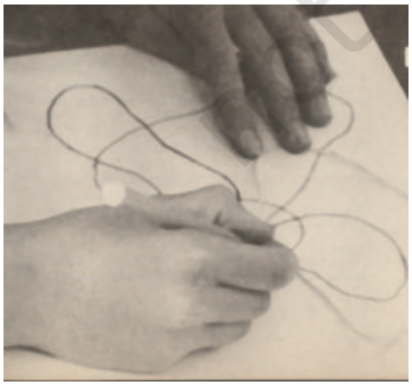

रेखाएँ अंकित करें–

- मोटी
- पतली
- लहरिया
- कठोर/मृदु
- टेढ़ी-मेढ़ी
- गुँथी हुई
- धुंधली होती हुई

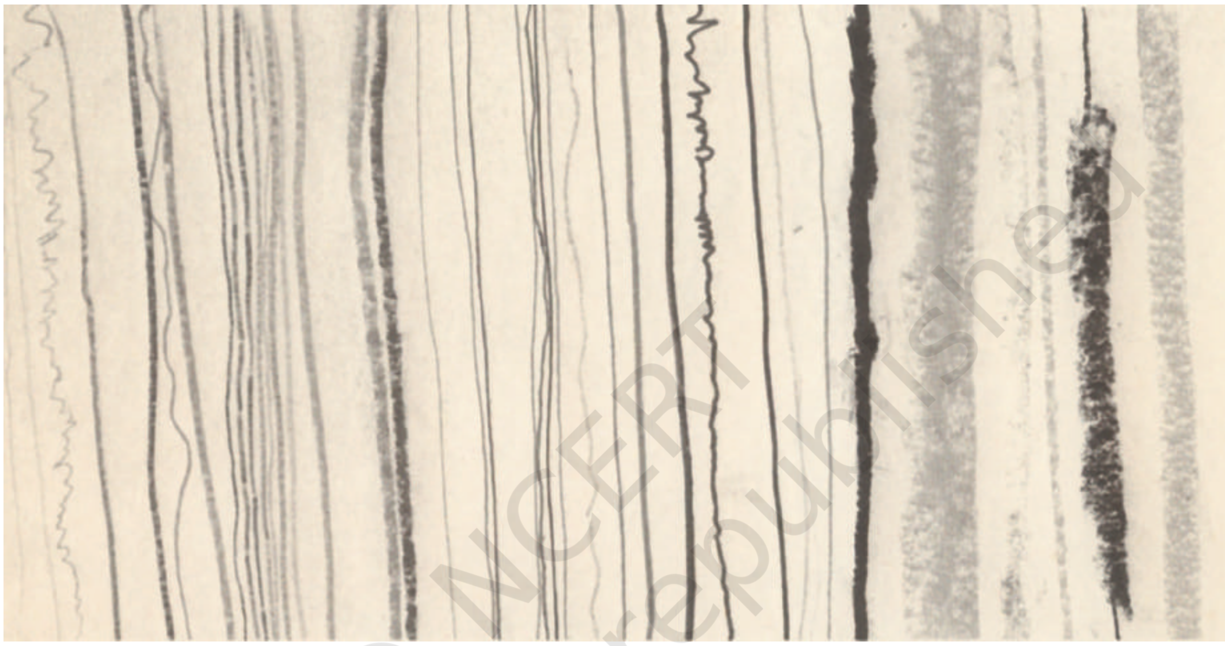

विभिन्न प्रकार की रेखाएँ

सुलेखन/मुद्रण (Calligraphy/Typography)

भारत के प्रत्येक प्रांत की अपनी एक सुंदर भाषा और लिपि है। इनका विकास होने में कई शताब्दियाँ लगी हैं। किसी एक लिपि को चुनें और अपनी मनपसंद पुस्तक अथवा कविता के शीर्षक के लिए सुलेखन कला के नमूने तैयार करें।

- अपने मनपसंद माध्यम का उपयोग करते हुए अक्षरों के आकार और शैली की योजना बनाएँ।
- अलग-अलग प्रयोजनों के लिए विभिन्न अक्षर साइज़ का प्रयोग करें।
- सावधानीपूर्वक अक्षरों के बीच अंतर रखें।
- कैलीग्राफी पढ़ने में आसान और सुंदर होनी चाहिए।

अलंकृत हस्तलिखित कला को कैलीग्राफी कहते हैं।

रंग

हमारे आस पास के रंग इस प्रकार वर्गीकृत किए जा सकते हैं–

प्राथमिक रंग–वे रंग जिन्हें मिलाकर बनाया नहीं जा सकता। वे हैं लाल, पीला और नीला।

© NCERT not to be republished

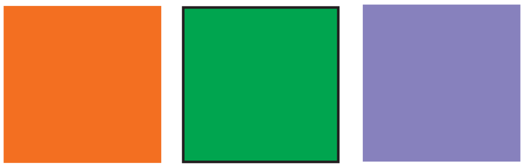

यौगिक (सैकेंडरी) रंग–दो प्राथमिक रंगों को मिलाकर इन्हें बनाया जा सकता है।

चटकीले रंगों से .... शीतल रंगों तक

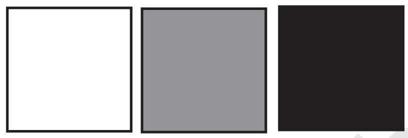

उदासीन रंग

वर्णहीन– केवल काला और सफ़ेद *एकवर्णी–एक ही रंग के स्तर* *चटकीले व शीतल रंगों का खेल*

आकार/बनावट

रेखाओं से घिरे स्थानों को आकार कहते हैं।

मोटिफ़ की पुनरावृत्ति पैटर्न कहलाती है।

मोटिफ़ के सममित और असममित नियोजन को डिज़ाइन कहते हैं।

मोटिफ़ और पैटर्न

एक डिज़ाइन में मोटिफ सममित, असममित और दोहराए गए हो सकते हैं। मोटिफ के दोहराव से पैटर्न बनते हैं।

सममित मोटिफ़

असममित मोटिफ़

प्राकृतिक आकार–फूल पत्तियाँ, जानवर

ज्यामितीय आकार–गोल, वर्ग और त्रिकोण

© NCERT not to be republished

क्रियाकलाप 10.8

पोस्टर बनाना

कक्षा–12
समय–दो कालांश

निम्नलिखित सुझावों को ध्यान में रखते हुए एक पोस्टर, चार्ट या भित्ति पत्रिका बनाएँ–

- हाशिया स्पष्ट रखें
- शीर्षक स्पष्ट रूप से लिखें
- पाठ्यवस्तु को पढ़ने योग्य शैली और आकार में लिखें
- पाठ्यसामग्री को रोचक चित्रों के साथ संतुलित करें
- विभिन्न रंग, बनावट और आकार प्रयोग में लाएँ।

चटकीले रंग का प्रयोग करें ....

स्पष्ट और सुन्दर सुलेखन कला का उपयोग करें..

एक असामान्य आकार ध्यान आकर्षित कर सकता है ....

विषय के अनुरूप चित्र आदि का चुनाव करें ....

पता, समय और अवधि स्पष्ट रूप से अंकित करें ....

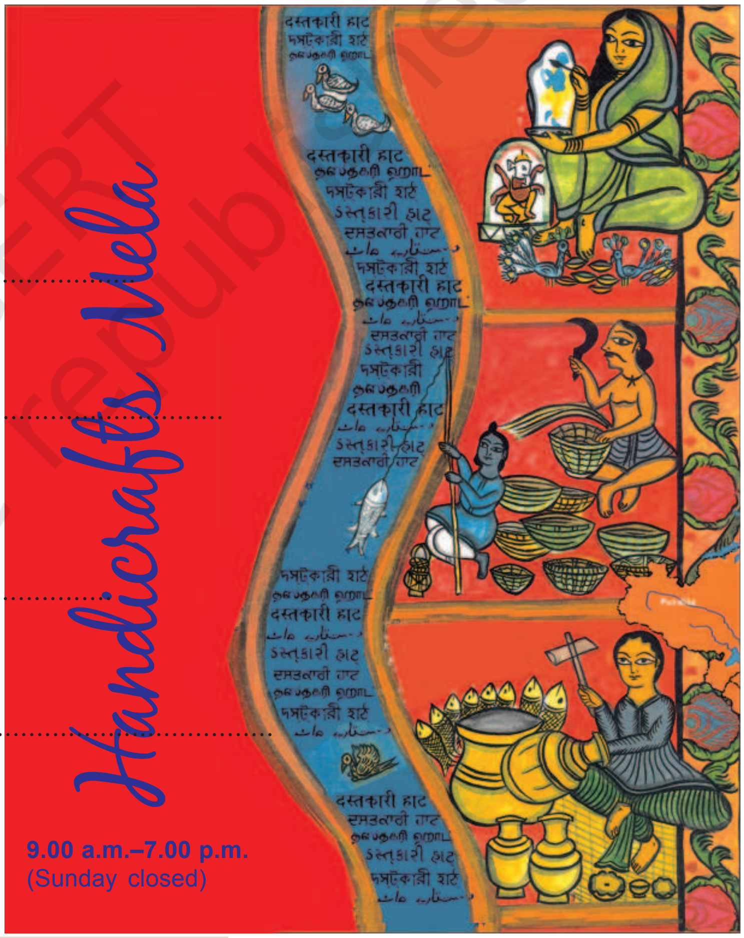

© NCERT not to be republished

सुझाए गए क्रियाकलाप

निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषयों पर पोस्टर बनाएँ–

- विद्यालय में क्राफ्ट मेला
- संगीत/नृत्य/अभिनय प्रदर्शन
- विद्यालय का वार्षिकोत्सव
- छायाचित्र/चित्रकला प्रदर्शनी

नोट

© NCERT
not to be republished